भूमिका

शीर्षक

इब्रानी धर्मग्रन्थ में प्रथम पुस्तक का शीर्षक "उत्पत्ति" है। अंग्रेजी शीर्षक *जेनेसिस* प्रचलित लतीनी बाइबल वलगेट से आया है, जो सेपट्युजेन्ट[1] (इब्रानी धर्मग्रन्थ का यूनानी अनुवाद) γένεσις का लिप्यंतरण है। किसी कार्य में प्रथम शब्द के अनुसार पवित्र लेख का नामकरण करना यहूदी चलन था; इसलिए पुस्तक का इब्रानी नाम בְּרֵאשִׁית *(बेरेशित)* है, परम्परागत तौर पर भाषांतरित "आदि में।"

लेखक और तिथि

उत्पत्ति के लेखक और तिथि का विषय कठिन है। पुस्तक हमें नहीं बताती कि कौन उसका लेखक है अथवा उसने इसे कब लिखा। हम पुराने नियम के अनेक अंशों से जानकारी प्राप्त करते हैं कि प्राचीन लेखक अपनी सामग्री को तैयार करने हेतु विभिन्न स्रोतों का उपयोग करते थे। लेखक गैर-प्रमाणिक लेखों से भी संदर्भ देते थे: गिनती 21:14, 15 में लेखक ने "यहोवा के संग्राम नामक" पुस्तक से, और यहोशू 10:13 में लेखक ने यहोशू के चार पहर के दिन सम्बन्धी कथन "याशार नामक पुस्तक" से लिया है। इसके साथ, 2 शमूएल का लेखक कहता है कि गिलबो पहाड़ पर राजा शाऊल और उसके पुत्रों की मृत्यु पर दाऊद के विलाप का उसका स्रोत भी "याशार नामक पुस्तक" था (2 शमूएल 1:18-27)। 1, 2 राजा; 1, 2 इतिहास; एज्रा; और नहेम्याह के लेखकों ने अपनी पुस्तकों को लिखते समय अनेक स्रोतों से सहायता प्राप्त की।

नये नियम में, लूका को मसीह के जीवन का सीधा ज्ञान प्राप्त नहीं था, परन्तु उसने बताया कि उसने अपने सुसमाचार वृत्तांत संकलित करने हेतु मौखिक और लिखित दोनों ही स्रोतों का उपयोग किया (लूका 1:1-4)। यह स्पष्ट जान पड़ता है कि, जहाँ लेखक घटनाओं के चश्मदीद गवाह नहीं होते थे और उन्हें परमेश्वर की ओर से सीधा प्रकाशन प्राप्त नहीं होता था (जैसे नबियों को प्राप्त था), वहाँ पवित्र आत्मा उन्हें पवित्र शास्त्र को लिखने के लिए कई बार अतिरिक्त स्रोतों का उपयोग करने की प्रेरणा देता था।

परमेश्वर ने उत्पत्ति के लेखक को प्रेरणा दी, और यह पुस्तक बाद की सभी पीढ़ियों के लिए संरक्षित की गई। उत्पत्ति के लेखक के विषय में आरम्भिक यहूदी परम्पराएँ कहती हैं कि "मूसा ने सीनै पर्वत पर व्यवस्था"[2] प्राप्त की। समझा जाता था कि व्यवस्था में केवल बाइबल की प्रथम पुस्तक ही सम्मिलित नहीं थी,

किन्तु बाकी पंच-ग्रन्थ पुस्तकें - निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, और व्यवस्थाविवरण भी सम्मिलित थीं।[3] बाइबल के अनेक भागों में इस संग्रह को "मूसा की व्यवस्था [अथवा 'पुस्तक']" कहा जाता है।[4]

अवश्य ही मूसा के पास पंचग्रन्थ लिखने के लिए समय था, क्योंकि उसने इस्राएलियों के साथ निर्जन प्रदेश में चालीस वर्ष बिताए थे। इस कार्य हेतु उसके पास शैक्षिक पृष्ठभूमि भी थी, क्योंकि उसे "मिस्रियों की सारी विद्या पढ़ाई गई" (प्रेरितों 7:22) थी। सर्वोत्कृष्ट नबी के रूप में (व्यव. 34:9, 10), उसने परमेश्वर से अनेक नियम एवं निर्देश प्राप्त किए, जिन्हें उसने लिख दिया (देखें निर्गमन 24:4; व्यव. 31:9)। इसके अलावा उसने उन स्थानों से सम्बन्धित यात्रा दैनिकी रखी, जहाँ इस्राएलियों ने छावनी डाली और जहाँ कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं (निर्गमन 17:14; गिनती 33:2-37) और इसके साथ ही उसने एक गीत भी लिखा (व्यव. 31:22)। भजन संहिता 90 को लिखने का श्रेय भी उसी को जाता है। हालाँकि, पंचग्रन्थ के प्रति मूसा के योगदान को बाइबल के केवल उन भागों तक ही सीमित नहीं करना चाहिए जिसका श्रेय उसे दिया जाता है, इसलिए कि अधिकतर घटनाओं के चश्मदीद गवाह और भागीदार होने के कारण, यहूदी लोगों के बीच उसकी बातें स्वाभाविक रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण थीं।

पंचग्रन्थ की अन्य पुस्तकों को छोड़, जिनमें मूसा द्वारा कुछ भाग लिखने का ज़िक्र है, कोई भी अंश उसे उत्पत्ति के किसी भी भाग के लेखक के रूप में नामित नहीं करता है। इसके साथ, उत्पत्ति के कुछ मूल पाठ मूसा के काल के बाद के प्रतीत होते हैं। उदाहरणार्थ, कनान देश के शेकेम में अब्राहम के आगमन के समय लेखक इन शब्दों का प्रयोग करता है, "उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे" (12:6)। इस कथन से महसूस होता है कि उस बात को कहनेवाला लेखक/सम्पादक मूसा के जीवनकाल के बाद के समय का था, जब कनानी न तो उस प्रतिज्ञात देश में रहते थे और न ही उस पर उनका अधिकार था।

एक और भाग यरदन घाटी पर मेसोपोटामिया के चार राजाओं द्वारा आक्रमण का ज़िक्र करता है। वह कहता है कि अब्राहम ने अपनी व्यक्तिगत सेना द्वारा उनका पीछा कर उन्हें "दान तक" (14:14) खदेड़ दिया। हालाँकि, न्यायियों के लेखक के अनुसार, शहर का पुराना नाम लैश था; न्यायियों के बाद के दान के गोत्र द्वारा इस शहर पर अधिकार कर लेने के बाद ही इसे "दान" नाम दिया गया (न्यायियों 18:27-29)।

लम्बे समय तक, इन परिच्छेदों में प्रत्यक्ष अराजकतावाद को देखा गया है, जैसा उत्पत्ति के दूसरे समान कथनों में भी दिखाई देता है (देखें 11:28, 31; 34:7; 36:31)। यह प्रमाण संकेत करता है कि मूसा के बाद कुछ सम्पादकीय अन्तर्वेश डाले गए थे। हालाँकि, यह जोड़ किसी भी तरह बाइबल की प्रेरणा और अधिकार को, अथवा इस परम्परागत विचार को कि मूसा ने इसे ई.पू.15 वीं और 13वीं शताब्दी के बीच उत्पत्ति की पुस्तक लिखी, खतरे में नहीं डालता।[5]

हम निश्चितता के साथ नहीं कह सकते हैं, उत्पत्ति की पुस्तक जैसे आज हमारे पास है वह वास्तविक रूप में हमारे पास कैसे आई। फिर भी, यह प्रतीत

होता है, कि मूसा, या उसके सहयोगी (जैसे यहोशू) की अधीनता में किसी और ने सम्भवतः मौखिक अथवा लिखित स्रोतों का उपयोग किया।[6] बाद में किसी समय, एक लेखक/सम्पादक,[7] ने पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, प्रमाणित रूप से अपने मौजूदा पाठकों के लिए अधिक प्रासंगिक बनाने हेतु कुछ नामों और स्थानों में सुधार किया।

हालाँकि, बाइबल के तर्कवादी आलोचकों ने इन डाले गए संभावित सम्पादित भागों और धर्मवैज्ञानिक विकास के अपने विकासमूलक विचारों का इस्तेमाल करते हुए तथा साथ ही बाइबल की प्रेरणा और अधिकार से इनकार करते हुए, इनका उपयोग इन कल्पित विचारधाराओं को रचने के लिए किया जिसमें कहा गया कि मूसा के सैंकड़ों वर्ष बाद उत्पत्ति (और पंचग्रन्थ के बाकी हिस्से) रचा गया। इनमें से अनेक "स्रोत आलोचकों" के अनुसार, कुलपतियों की और मूसा की कहानियाँ दन्त कथाओं पर आधारित हैं जिनका ऐतिहासिक तथ्यों में वास्तविक आधार नहीं है।

इस टिप्पणी के लिए "दस्तावेज़ अवधारणा" का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करना इसकी सीमा से बाहर है; किन्तु, उत्पत्ति की व्याख्या में कुछ विशेष बिन्दुओं पर टिप्पणियाँ उस सिद्धांत की कुछ कमियों को दर्शाएंगी। समीक्षकों ने बाइबल की प्रथम पुस्तक की मूल एकता और सम्पूर्णता पर विस्तार से अध्ययन किया। फिर भी, वे यह प्रस्तुत करने हेतु कोई भी उचित प्रमाण नहीं खोज पाए कि उत्पत्ति और पंचग्रन्थ के अधिकतर भाग, मूसा द्वारा नहीं लिखे गए। उनके सिद्धान्त प्राथमिक रूप से संशयी पूर्वधारणाओं पर रचित हैं जो किसी भी वस्तुगत युक्ति द्वारा सत्यापित नहीं किए जा सकते हैं।

यह मान लेना तर्कसंगत है कि उत्पत्ति की पुस्तक को लिखने के लिए लेखक और पवित्र आत्मा ने जिन साधनों का प्रयोग किया वे बाइबल आधारित विश्वास के लिए आवश्यक नहीं हैं, क्योंकि बाइबल हमें यह जानकारी नहीं देती है। दूसरी ओर, हम प्राचीन ऐतिहासिक दस्तावेज़ों, अभिलेखों, और दूसरे पुरातत्व अवशेषों से जितना अधिक कुलपतियों के संसार के विषय में सीखते हैं, हम और अधिक इस तथ्य से अवगत् होते हैं कि बाइबल की कहानियाँ सच्ची हैं। वे यहूदियों के लिए यशस्वी और शूरता का अतीत गढ़ने हेतु वीर पुरुष और स्त्रियों की केवल दन्तकथाएँ नहीं हैं। इसके विपरीत, उत्पत्ति (और पंचग्रन्थ) का वास्तविक नायक सृष्टिकर्ता परमेश्वर है, जिसने अपने अनुग्रह से पापी मनुष्यों को बुलाया एवं आशीषित किया, और उनकी त्रुटियों के बावजूद एक ऐसी जाति उत्पन्न करने में उनका उपयोग किया जिसके द्वारा मनुष्य को पाप से बचाने हेतु एक दिन वह अपने पुत्र को इस संसार में ला सकता था।

उत्पत्ति की पुस्तक किन्हीं सच्चे किन्तु भ्रमित व्यक्तित्वों द्वारा रचित एक "पवित्र छल" नहीं है। बल्कि यह परमेश्वर का प्रेरित वचन है जो संसार का "आरम्भ," मनुष्य की रचना, और पाप का मूल और उसका परिणाम बताता है। यह मुख्य रूप से, मानव इतिहास में ईश्वरीय छुटकारे की कहानी का आरम्भ प्रस्तुत करता है जो बाइबल के बाकी भाग में जारी रहता है। प्रकाशितवाक्य की

पुस्तक में मनुष्यों के छुटकारे के दृश्य के साथ कहानी का समापन है - जो अदन की वाटिका में नहीं, किन्तु स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर है, जहाँ मूसा और मेमने (यीशु) के गीत गाए जाते हैं और त्रिएक परमेश्वर और उसके लोगों की संगति का आनन्द है।

विषय-वस्तु

टोलडोथ विभाजन

उत्पत्ति को दस भागों में विभाजित किया जा सकता है, प्रत्येक इब्रानी शब्द תּוֹלְדוֹת *(टोलडोथ,* या *थोलेडोथ),* से आरम्भ होता है, जिसका अर्थ "वर्णन," "पीढ़ियाँ," "वंशज" या "पैतृकवर्णन" है (देखें 2:4; 5:1; 6:9; 10:1; 11:10, 27; 25:12, 19; 36:1; 37:2)। प्रत्येक स्थिति में, *टोलडोथ* का उपयोग पिता अथवा मुख्य चरित्र की पहचान करते हुए एक आरम्भिक वाक्यांश के रूप में किया गया है। केवल एक सम्भावित अपवाद 2:4 में है, जिसे कुछ लोग 2:5-25 की भूमिका की बजाय 1:1-2:3 के समापन के रूप में देखते हैं। कुछ एक अवसरों पर, *शब्द टोलडोथ* एक भाग में दोहराया गया है (10:1, 32; 25:12, 13; 36:1, 9)।

जब शब्द *टोलडोथ* उत्पत्ति में दस भागों के आरम्भ में दिखाई देता है, NASB केवल 2:4 में उसका अनुवाद "वर्णन" करता है और बाकी सभी स्थानों पर "पीढ़ियाँ" करता है। KJV निरन्तर इस शब्द का अनुवाद "पीढ़ियाँ" करता है; RSV प्रथम चार अंशों में "पीढ़ियाँ," अगले चार अंशों में "वंशज" और अन्तिम में "इतिहास"। पाँच भागों में, *टोलडोथ* के बाद एक वर्णन (कहानी) है, जबकि दूसरे पाँच भागों में यह वंशावलियों के लिए एक शीर्षक जान पड़ता है। इन दस *टोलडोथ* भागों पर आधारित एक रूपरेखा इस प्रकार है:

भूमिका: आकाश और पृथ्वी की सृष्टि (1:1-2:3)।

प्राक्कालीन परिवारों का वर्णन

1. आकाश और पृथ्वी का वर्णन (2:4-4:26)
2. आदम की वंशावली (5:1-6:8)
3. नूह का पैतृक वर्णन (6:9-9:29)
4. नूह के पुत्रों की वंशावली (10:1-11:9)
5. शेम की वंशावली (11:10-26)

अब्राहम के परिवार का वर्णन

6. तेरह का पैतृकवर्णन (11:27-25:11)
7. इश्माइल की वंशावली (25:12-18)
8. इसहाक का पैतृकवर्णन (25:19-35:29)
9. एसाव की वंशावली (36:1-43)

10. याकूब का पैतृकवर्णन (37:1-50:26)

संरचना

संरचनात्मक दृष्टि से, पुस्तक में दो मुख्य विभाजन है: (1) अध्याय 1 से 11 तक और (2) अध्याय 12 से 50 तक। पहला भाग सृष्टि का वर्णन जल प्रलय तक करता है, और दूसरा भाग अब्राहम के साथ उसकी प्रतिज्ञा की पूर्णता में, परमेश्वर के लोगों का विकास दर्शाता है।

अध्याय 1-11. यह पहला भाग अपने अभिप्राय में सार्वभौमिक है और उसमें मौलिक इतिहास है, अर्थात् आकाश और समस्त खगोलीय पिण्डों की सृष्टि, समुद्र में और धरती पर जीवन के समस्त प्रकार के साथ पृथ्वी की सृष्टि, और प्राणी जो ऊपर आसमान में उड़ते हैं। वर्णन शीघ्र ही मनुष्य की सृष्टि की ओर बढ़ता है - नर और नारी के रूप में मनुष्य, जो उसकी समानता और स्वरूप में सृष्ट, परमेश्वर की सृष्टि के शीर्ष हैं। परमेश्वर ने उनकी प्रत्येक आवश्यकता का प्रबन्ध किया, उनको एक पूर्ण परिवेश में रखा और अपने जीवनों की दिशा का चुनाव करने हेतु स्वतंत्र इच्छा और सामर्थ्य दिया (1:1-2:25)।

सृष्टि उत्पन्न होने के बाद आदम और हव्वा के द्वारा पाप का आरम्भ हुआ, जो कैन द्वारा अपने भाई हाबिल की हत्या से होता हुआ सम्पूर्ण मानव जाति में फैल गया। इसने मनुष्य को एक विरोधी वातावरण दिया और उसे अपनी मृत्यु के सामने खड़ा किया जो निश्चित थी (3:1-5:32)। पाप में मनुष्य का पत्तन तब तक निरंतर जारी रहा जब तक वह महामारी की तरह पूरी पृथ्वी पर फैल न गया, और उसको हिंसा और विनाश से भर न दिया; परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से एक मनुष्य और उसका परिवार उस बाढ़ से बचाए गए जो परमेश्वर ने मनुष्य की दुष्टता को दंड देने के लिए भेजी थी (6:1-9:29)। बाद में लोग एक साथ इकट्ठा हुए कि बाबुल की ऐसी मीनार बनाकर अपने नाम को महान करें जिसकी चोटी स्वर्ग तक पहुँचती हो; लेकिन परमेश्वर ने उनके प्रयासों को व्यर्थ कर दिया, और उनकी भाषाओं में गड़बड़ी फैला दी, और वे पूरी पृथ्वी पर तितर-बितर हो गए (10:1-11:32)।

अध्याय 12-50. सार्वभौमिक पाप और दण्ड की कहानियों के बाद, उत्पत्ति का दूसरा मुख्य भाग अपने उद्देश्य में सीमित हो जाता है। इस संदर्भ में, परमेश्वर ने प्रतिज्ञाएं दीं ताकि मनुष्यों की अवज्ञा के कारण आए श्रापों पर जय पा सकें। इन अध्यायों में पुस्तक का सार-तत्व है, जिसमें परमेश्वर के लोगों का, अर्थात्, कुलपति अब्राम/अब्राहम[8] और उसके वंश के इतिहास का आरम्भ है।

1. यह भाग परमेश्वर की बुलाहट पर अब्राहम का अपने घर ऊर (दक्षिणी मेसोपोटामिया में) को छोड़कर उस कनान देश को जाने से आरम्भ होता है, जहाँ वह अनगिनत आशीषें पाएगा। उन आशिषों में भूमि, एक बड़ा नाम और जाति (यद्यपि उस समय वह निर्वंश था) और यह सच्चाई कि उसके द्वारा पृथ्वी के सभी कुल आशीषित होंगे, सम्मिलित थे। अब्राहम ने अपने विश्वास के साथ संघर्ष किया और उसने कई साल परमेश्वर में निर्बल किन्तु बढ़ते हुए भरोसे के साथ

बिताए। काफी समय के बाद, उसका विश्वास दृढ़ हुआ और इसहाक - प्रतिज्ञात पुत्र - का जन्म हुआ (अध्याय 21; देखें अध्याय 12-23)।

2. अब्राहम और याकूब के बीच मुख्य तौर से इसहाक एक परिवर्ती के रूप में है। उसका जीवन वृतान्त आश्चर्यजनक रूप से संक्षिप्त है। एक विश्वासयोग्य सेवक के द्वारा जिसे अब्राहम ने वापस हारान भेजा (जहाँ उसके पिता के परिवार के कुछ लोग अभी भी रहते थे), इसहाक ने एक पत्नी "रिबका" प्राप्त की। वह अनेक वर्षों तक बांझ थी; किन्तु इसहाक द्वारा उसके लिए प्रार्थना करने के बाद, परमेश्वर ने उनको जुड़वां बेटे: एसाव और याकूब के जन्म द्वारा आशीषित किया। इसके साथ, परमेश्वर ने इसहाक के साथ अपनी प्रतिज्ञा को नया किया; किन्तु परमेश्वर द्वारा इन प्रतिज्ञाओं के पूरे होने की योजना इसहाक की इच्छा के विरुद्ध थी। समृद्ध होने की उनकी आशीष उसके प्रिय पुत्र, एसाव के द्वारा नहीं, किन्तु उसके छोटे पुत्र, याकूब के द्वारा बनी रहती (24:1-25:26)।

3. याकूब की कहानी एक पुरुष के विषय में बताती है जिसे अपने जीवन के अधिकतर भाग में सच्चाई के साथ संघर्ष करना पड़ा। वह षड्यन्त्र और धोखे को अपनी जीवनशैली बनाता दिखाई देता था। अपने आरम्भिक काल में, याकूब ने एसाव का लाभ उठाया जब वह भूखा था, उसे जन्माधिकार बेचने के लिए राज़ी किया। जब उसका पिता वृद्ध और दृष्टिहीन था, याकूब ने (अपनी माँ, रिबका के साथ मिलकर) इसहाक को धोखा दिया कि वह एसाव के बजाय, उसे आखिरी आशीष प्रदान करे। तत्पश्चात्, अपने भाई के क्रोध से बचने के लिए, याकूब ऊपरी मेसोपोटामिया में हारान को भाग गया। उस दूरस्थ स्थान पर, उसे उसका जोड़ीदार मिल गया क्योंकि उसका मामा लाबान निपुण झूठा और धोखेबाज़ था। उसने याकूब को धोखा देकर उसे अपनी बेटियों, राहेल और लिया के संग विवाह करने का अधिकार प्राप्त करने हेतु उससे चौदह वर्षों तक काम कराया। जब लाबान ने याकूब से छः और साल काम करने के बदले बहुत सारी भेड़-बकरियां देने का वायदा किया तो उसने एक बार फिर उससे झूठ बोला। फिर भी, परमेश्वर याकूब के साथ था, और उसे पशुओं के झुण्ड देकर आशीषित करता रहा। उसकी पत्नियों के अलावा, याकूब को दो दासियाँ रखैल के रूप में मिलीं। कुल मिलाकर, इन चार पत्नियों ने याकूब के लिए तेरह बच्चे जने (12 पुत्र और एक पुत्री)। परमेश्वर ने उसके द्वारा वाचा की प्रतिज्ञाओं को पक्का किया और आखिरकार उसके भाई एसाव के साथ उसका मेल करवाने उसे कनान लाया (25:27-35:15)।

4. राहेल द्वारा याकूब के प्रिय पुत्र, यूसुफ को जन्म देने के बाद, सबसे छोटे पुत्र, बिन्यामीन को जन्म देते समय उसकी मृत्यु हो गई। यूसुफ अपने पिता के लाड़-प्यार में पला था, और इसके कारण उसके भाइयों का उसके प्रति अत्यधिक द्वेष उत्पन्न हो गया। उदाहरणार्थ, यूसुफ अपने भाइयों के विषय उनके पिता के पास बुरी खबर लेकर आया। उसने पूरे परिवार को अपना स्वप्न बताकर क्रोधित किया कि एक दिन वे सब उसके सामने दण्डवत करेंगे। जब वह सत्रह वर्ष का था, यूसुफ के भाइयों ने उसे मिस्र जा रहे व्यापारियों के हाथ दासत्व में बेच दिया;

उन्होंने अपने पिता के पास यह विचार छोड़ा कि एक जंगली जानवर ने उसे मार डाला था (35:16-37:35)।

5. मिस्र में, सर्वप्रथम यूसुफ पोतीपर का दास बनकर रहा, जो फिरौन के अंगरक्षकों का प्रधान था। जब पोतीपर की पत्नी द्वारा उस पर उससे यौन सम्बन्ध बनाने का प्रयास करने का गलत दोष लगाया गया, जिसके कारण उसे कैद खाने में डाल दिया गया। फिर भी, इस सत्यपरीक्षा में परमेश्वर यूसुफ के साथ रहकर दूसरे दो कैदियों के स्वप्न का अर्थ बताने में उसकी सहायता की। आखिरकार, उसने मिस्र में सात वर्षों की बहुतायत के बाद सात वर्षों के अकाल के विषय फिरौन के स्वप्न का अर्थ बताया। जब फिरौन ने जाना कि यूसुफ पर यह प्रकट करनेवाला उसका परमेश्वर है, तो उसने यूसुफ को आनेवाले अकाल के वर्षों की तैयारी के लिए सम्पूर्ण अधिकार देकर मिस्र का द्वितीय शासक बना दिया।

समय से, दक्षिण पूर्व भूमध्यसागरीय संसार में सूखा और अकाल आया, और याकूब ने अपने पुत्रों को अनाज खरीदने मिस्र भेजा। यूसुफ ने उन्हें पहचान लिया, परन्तु उन्होंने उसे नहीं पहचाना; इसलिए वह उन्हें परखने लगा। पहले, उसने उन पर भेदिए होने का दोष लगाया, और उसके बाद उसने उन सब को कैद खाने में डाल दिया। उसने अधिकतर भाइयों को अनाज लेकर अपने पिता के पास लौटने दिया, और उनके द्वारा बिन्यामीन को लेकर लौटने तक केवल शिमोन को बन्दी बना लिया। जब उनका अन्न समाप्त हो गया, याकूब ने और प्रावधान के लिए भाइयों द्वारा बिन्यामीन को अपने साथ मिस्र ले जाने पर सहमति जतायी। आखिरकार, यूसुफ को यह निश्चय हो गया कि उसके भाई बदल गए हैं और अनेक वर्ष पूर्व उसके विरुद्ध किए कृत्य के लिए खेदित थे। इसलिए, उसने स्वयं को उनके सामने प्रकट किया और उन्हें वापस कनान उनके पिता और बाकी परिवार को गोशेन देश में लाने के लिए भेजा, जहाँ वे उसके निकट रह सकते थे।

उत्पत्ति यूसुफ के अपने भाइयों को उनके पिता की मृत्यु के बाद पुनः आश्वस्त करने के साथ समाप्त होता है। उसने उन्हें हानि न पहुँचाने का वादा किया, यह बल देते हुए कि परमेश्वर का दिव्य हाथ इन सभी घटनाओं में कार्य कर रहा था ताकि "बहुत से लोगों के प्राण बचे" (50:20)। अपनी मृत्यु से पूर्व, यूसुफ ने अपने भाइयों को ताकीद दी कि परमेश्वर उस वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहेगा जो उसने अब्राहम, इसहाक, और याकूब के साथ बांधी थी। वह निश्चित तौर पर उनकी चिन्ता करेगा और एक दिन उन्हें कनान देश में वापस ले जाएगा। इसलिए कि मिस्र उनका स्थायी घर नहीं था, यूसुफ ने उन्हें निर्देश दिया कि उनके प्रतिज्ञात देश में लौटते समय वे उसकी हड्डियाँ अपने साथ ले जाएँ। ये अन्तिम शब्द अध्याय 12 से 50 को आपस में जोड़कर रखते हैं, जब वे पाठकों को आनेवाली घटनाओं के लिए तैयार करते हैं।

उत्पत्ति और इतिहास

उत्पत्ति की आदिकालीन घटनाओं, वंशावलियों (अध्याय 1-11), और कुलपतियों के वृतान्तों (अध्याय 12-50) के वर्णन में, लेखक ने व्यक्तियों को वास्तविक ऐतिहासिक चरित्रों के रूप में और उनके जीवन की घटनाओं को समय में वास्तविक रूप से घटित होते दर्शाया है। यद्यपि कुछ लोगों ने कुलपतियों की ऐतिहासिकता पर प्रश्न उठाया है, मूल पाठों का एक सीधा पठन प्रगट करता है कि व्यक्ति कुलों के मानवीकरण नहीं हैं अथवा मात्र किसी उपजाऊ कल्पना के परिणाम हैं। इसलिए कि प्राचीन इतिहास का सम्बन्ध शब्द और व्यक्ति और देश की घटनाओं से एक ही बार हैं जिन्हें न कभी दोबारा जीया जा सकता है, न दोहराया जा सकता है, अथवा सम्पूर्ण निश्चितता के साथ यथार्थता की जाँच हो सकती है, इतिहास में हमेशा विश्वास का एक घटक होता है कि वर्णन - मौखिक अथवा लिखित - को विश्वसनीयता से संरक्षित किया गया है।

वचन की प्रेरणा और अधिकार में विश्वास करनेवाले विश्वासी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि पवित्र आत्मा ने बाइबल के लेखक/लेखकों को उन विषयों को संरक्षित रखने के लिए मार्गदर्शित किया, जिन्हें परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशज के जीवनों में आरम्भ किया था क्योंकि वह चाहता था कि हम सृष्टि की रचना और मनुष्य जाति, पाप का उद्गम और उसके परिणाम, और छुटकारे की योजना को जानें। हालाँकि, कोई भी पपिरस (भोजपत्र) वैवाहिक दस्तावेज़, चर्म पत्र, मृतिका पट्टियाँ, या शिलालेख प्राप्त नहीं हुआ है जो उत्पत्ति की पुस्तक के किसी भी कुलपिता का विशेष रूप से उल्लेख करता है।[9]

यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि प्राचीन समय में बहुत ही थोड़ी जानकारी लिखी जाती थी। अनेक विशेषज्ञ मानते हैं कि मूल पाठों की केवल छोटी संख्या जो सम्भवतः बच गईं हैं आखिरकार पुरातत्वज्ञ द्वारा खोजी गईं हैं। इसके अतिरिक्त, उत्पत्ति में वर्णित व्यक्ति प्राचीन नियर ईस्ट (पूर्वीय भूमध्यसागर के चारों ओर का क्षेत्र) के समृद्ध और प्रचलित लोग नहीं थे; इसके बदले, वे, ज्यादातर, अर्ध-खानाबदोश थे जो वस्तुतः प्राकृतिक स्थानों में अलक्षित घूमते रहते थे। इसका केवल एक अपवाद यूसुफ था, मिस्र में फिरौन के बाद अधिकार में दूसरे शासक के रूप में जिसकी पदोन्नति हुई थी। यदि उसका नाम किसी शिलालेख पर अंकित होता, वह बचता नहीं यदि यूसुफ हिकसस वंश का भाग था जिससे लोग द्वेष रखते थे। ये लोग गैर-मिस्री, सीरिया और कनान के सिमेटिक (सामी/सीमा सम्बन्धी) शासक थे, जिन्होंने मिस्र पर 100 से 150 वर्षों तक शासन किया। जब उन्हें देश से निष्कासित कर दिया गया, मिस्री लोगों ने सब कुछ किया जिन्हें वे उनके नामों को मिटाने और मिस्र में उनके निवास के प्रत्येक स्मरण को मिटाने के लिए कर सकते थे।[10] परन्तु यह सम्भव है कि यूसुफ हिकसस राजाओं से पहले वहाँ रहता था।

पुरातत्त्व विज्ञान और कुलपतियों के नाम

जबकि पुरातत्व विज्ञानी कुलपतियों की ऐतिहासिकता को प्रमाणित नहीं करते और कुछ विद्वान बाइबल के वर्णन और प्राचीन मेसोपोटामिया की सांस्कृतिक प्रथाओं को समानान्तर करने की धुन में लगे रहते हैं, फिर भी उत्पत्ति की पुस्तक में पाए जानेवाले अनेक विवरण अपने लेखों की प्राचीनता को प्रमाणित करते हैं। उपलब्ध प्रमाण उसे अति असंभावव्य बनाता है कि वृत्तांत मात्र यहूदी लेखकों की रचना थी उस समय काल के 1,000 अथवा 1,500 वर्ष बाद जिसका वर्णन वे करते हैं, जिस तरह कुछ समालोचक विद्वानों का तर्क रहा है। इसके विपरीत, प्राचीन लेख कई एक दिशा में बाइबल के वर्णन के प्रति विश्वास का हाथ भी बढ़ाते हैं।

सर्वप्रथम, कुलपतियों की कहानियों में वर्णित नाम मेसोपोटामिया में ई.पू. द्वितीय सहस्त्राब्दी के आरम्भ में प्रयुक्त नामों के बिल्कुल समान हैं, जैसे "सरूग" (अब्राहम का परदादा), "नाहोर" (अब्राहम का भाई), और "याकूब" (अब्राहम का पौत्र)।

द्वितीय, बाइबल का वर्णन बताता है कि तेरह, अब्राहम, और नाहोर का मूल निवास ऊर था परात महानद के उस पार, और कि परमेश्वर की बुलाहट से पूर्व, "वे दूसरे देवताओं की उपासना करते थे" (यहोशू 24:2)। "लाबान," "सारा," "मिलका," और "तेरह" के समान नाम चन्द्रमा की उपासना से सम्बन्धित दिखाई देते हैं, जिससे देवी और देवताएं उस प्राचीन शहर में प्रमुख थे, और हारान में भी, जहाँ अब्राहम का परिवार बाद में रहता था।[11]

तृतीय, "अब्राहम," "इसहाक," "इश्माएल," "याकूब," "यूसुफ," "जबुलून," "आशेर," "इसाकार," "बिन्यामीन," और दूसरे नाम मध्य और ऊपरी परात महानद के अनेक सामग्रियों पर देखे गए हैं जो इसी काल से आते हैं। यद्यपि इनमें से कुछ नाम मूल पाठों में प्रथम सहस्त्राब्दि तक मिली हैं, यह किसी भी तरह से उनके प्राचीनत्व के प्रभाव को कुन्द नहीं करता है क्योंकि ये नाम पूर्वकालीन प्रकार के हैं। दूसरी सहस्त्राब्दी के पहले अर्ध भाग में उनकी प्रसिद्धि किसी भी अन्य समय काल में समानान्तर नहीं की जा सकती है।[12]

पुरातत्व विज्ञान और कुलपतियों की सांस्कृतिक प्रथाएँ

इसलिए कि पारिवारिक विषय उत्पत्ति में अति महत्वपूर्ण हैं, यह स्वाभाविक है कि विद्वानों ने कुलपतियों के विवाह, विरासत, दफन-कफन, और ऐसे ही अनेक रीति रिवाजों की तुलना प्राचीन मेसोपोटामिया में रहनेवाले लोगों के सांस्कृतिक प्रथाओं से किया है, जिस तरह उनके लेखों में वर्णित है। हालाँकि, कोई भी अधिक समरूप बनाने में और उत्पत्ति और खास प्राचीन प्रथाओं के बीच झूठी तुलना करने के सम्बन्ध में काफी दूर जा सकता है। दूसरी ओर, तीन क्षेत्र हैं जिनमें कुलपतियों की सांस्कृतिक प्रथाएँ एक बाद के समय की बजाय, वास्तविक रूप में ई.पू. दूसरी सहस्त्राब्दि में उनके बीच में होंगी।

प्रथम, उत्पत्ति 25:23 में ज्येष्ठ पुत्र के लिए एक इब्रानी רַב *(रब)* का उपयोग

किया गया है, जहाँ पर परमेश्वर एसाव और याकूब के सम्बन्ध में स्पष्ट करता है, "बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा।" ई.पू. दूसरी सहस्त्राब्दि के मध्य से प्राप्त कई दूसरे प्राचीन लेखों में यही शब्द, *रब*, "ज्येष्ठ" पुत्र के लिए उपयोग किया गया है; मगर, बाद में इस शब्द का उपयोग भिन्न रूप लेता है, और यह सशक्त है, उत्पत्ति के वृतान्त के प्राचीनत्व का संकेत।[13]

द्वितीय, कुलपतियों के समय में एक दास को गोद लेकर वारिस बनाना एक दस्तूर था। नूज़ी पट्टिकाओं के अनुसार, एक जोड़ा जिसके पास पुत्र नहीं होता था एक को गोद ले सकते थे, और माता-पिता के जीवित रहने तक उनकी देखरेख करना उसकी ज़िम्मेदारी होती थी। उनकी मृत्यु होने पर, उसे उनको उचित रीति से दफनाना और उनके लिए विलाप करना होता था, इसके बदले, दत्तक पुत्र उनकी सम्पत्ति का वारिस होता था।[14] अब्राहम दमिश्कवासी एलीएजेर के साथ बेशक यही करना चाहता था, इसलिए कि उसके पास कोई पुरुष वारिस नहीं था (15:2-4) और वह लगभग पचासी वर्ष का था (देखें 12:4; 16:3)। किन्तु, यह दस्तूर प्रथम सहस्त्राब्दी ई.पू. के साथ सही नहीं बैठता है क्योंकि, मूसा की व्यवस्थानुसार, जब इस्राएलियों ने प्रतिज्ञात देश को अपने कब्जे में कर लिया, उसकी विरासत कुल परिवार के पास ही रहना ज़रूरी था (गिनती 27:1-11; 36:1-12)।

तृतीय, कुलपतियों के धार्मिक और नैतिक रिवाज़ मूसा की व्यवस्था के अधीन दस्तूरों से पहले का समय प्रतिबिम्बित करता है; वास्तव में, वे व्यवस्था के बाद की मांगों का खण्डन करते हैं। इसका एक उदाहरण उत्पत्ति 20:12 में स्पष्ट है, जो कहता है कि अब्राहम ने अपनी सौतेली बहन सारा से विवाह किया था। जब कि, यह लैव्यव्यवस्था 18:9 में बिल्कुल मना था। इसके साथ, उत्पत्ति 29:21-30 वर्णन करता है कि याकूब ने दो बहनों से विवाह किया: राहेल और लीया। जिस पर भी, लैव्यव्यवस्था 18:18 में इसकी सख्त मनाही है। आगे, उत्पत्ति 28:10-19 बताता है कि "परमेश्वर" याकूब को एक स्वप्न में दिखाई दिया और उसे आशीषित किया; और जब कुलपति जागा, उसने उस स्थान पर परमेश्वर की उपस्थिति स्मरण करने के लिए पत्थर का एक खम्भा खड़ा किया। कनानी धार्मिक रीतियों में जो मूर्तिपूजा से सम्बन्धित थे इस्राएलियों के जुड़ाव का खतरा होने के कारण, पूर्ववर्ती की तरह दस्तूरों की पंचग्रन्थ की व्यवस्था में निंदा की गई थी (लैव्य. 26:1; व्यव. 16:21, 22)। ये अवलोकन दृढ़तापूर्वक प्रस्तावित करते हैं कि कुलपतियों की कहानियाँ ऐतिहासिक हैं और प्रथम सहस्त्राब्दी में रहनेवाले बाद के किसी यहूदी लेखक की कपोलकल्पना नहीं हैं।

धार्मिक शिक्षा[15]

सृष्टि में परमेश्वर का उद्देश्य (अध्याय 1)

उत्पत्ति की पुस्तक का विषय परमेश्वर है, उसी तरह वह पूरी बाइबल का भी है। वह सृष्टि का श्रेष्ठ प्रभु है, जो अपने कार्यों द्वारा अपने गुण प्रगट करता है।

परमेश्वर ने मनुष्य को आशीषित करने के लिए समस्त निर्जीव वस्तु और सजीव जीवन की सृष्टि की, और उसने सृष्टि को केवल "अच्छा," ही नहीं किन्तु "बहुत अच्छा" घोषित किया (1:4, 10, 12, 18, 21, 25, 31)। परमेश्वर ने आगे अपनी भलाई और प्रेम दोनों को प्रदर्शित किया जब उसने मनुष्य को अपनी समानता एवं स्वरूप में बनाया, ताकि वह उसे धन्य कहे और उसके संग व्यक्तिगत सम्बन्ध रख सके। एक भण्डारी के रूप में मनुष्य का कार्य सभी प्राणियों पर अधिकार रखना था और उनको परमेश्वर की इच्छा के अधीन लाना था, किन्तु मनुष्य को सबसे पहले श्रेष्ठ प्रभु की इच्छा के अनुकूल चलना सीखना था।

परमेश्वर का अपनी सृष्टि के लिए प्रावधान (अध्याय 2; 3)

आकाश और धरती और उसमें की सब वस्तुओं की सृष्टि करने के पश्चात परमेश्वर ने विश्राम किया। एक सिद्ध परिवेश के रूप में उसने मनुष्य को एक खूबसूरत वाटिका दी और उसमें सभी प्रकार के पशु और पक्षी दिए। उसने स्त्री की भी सृष्टि की, एक सहायक जो मनुष्य के अनुरूप थी, कि वह गहरे मानवीय स्तर पर उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध रख सके। इसके साथ - साथ, शारीरिक भरण - पोषण के लिए, परमेश्वर ने प्रत्येक वृक्ष को सभी प्रकार के अच्छे फलों को उत्पन्न करने की शक्ति दी, जीवन के वृक्ष के साथ जो वाटिका के बीच में था। परमेश्वर ने मनुष्य को बगीचे की देखभाल करने का निर्देश दिया। परमेश्वर की एक ही निषेधाज्ञा थी कि पुरुष और स्त्री अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से न खाएं। किन्तु, आदम और हव्वा, परमेश्वर के समान बनने की लालसा में और उसकी इच्छा के अधीन रहने से इनकार करके, मानवता के लिए वही दुखद परिणाम: मृत्यु के साथ परमेश्वर से विद्रोह और अलगाव का नमूना स्थापित कर दिया।

पाप के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध (अध्याय 4-8)

हाबिल की तरह, सृष्टिकर्ता के प्रति मनुष्य के कुछ प्रत्युतर वास्तविक भक्ति और उपासना के रूप में चित्रित थी। कैन की तरह, कुछ अस्वीकार्य धार्मिक कार्य भी थे, जिसने अपने भाई की हत्या की और जिसे प्रभु की उपस्थिति से दूर कर दिया गया। कैन ने घुमंतू भगोड़े की तरह परमेश्वर का दण्ड सहा। यद्यपि उसके वंश को संस्कृति - संगीत और कला, धातु का उपयोग, और शहर निर्माण - को आरम्भ करने का श्रेय प्राप्त है, पाप का श्राप उनके ऊपर था।

उनके मध्य पाप की उपस्थिति पीढ़ियों बाद भी प्रकट है, उनके समान जो कैन की पीढ़ी में हुए आत्म-केन्द्रित और परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी थे। वे घृणा और द्वेष से भरे थे, और उन्होंने उन पर पलट कर हमला किया जो उनके विचार में विरोधी और अन्यायपूर्ण संसार था। उदाहरणार्थ, उनमें से एक, लेमेक, बदले की भावना से भरकर, एक जवान की हत्या करने के विषय घमंड किया जो मात्र उसे चोट पहुँचाता था (4:23, 24)।

अनेक लोगों के जीवन का वर्णन मात्र शारीरिक ज़िन्दगी जीनेवालों के तौर पर किया गया है; अर्थात्, उनका जन्म हुआ, उनके बच्चे हुए, और प्रकट रूप में परमेश्वर के साथ सम्बन्ध रखे बगैर मर गए (अध्याय 5)। इस प्रकार की परमेश्वर की अनुपस्थिति से मनुष्य जाति के जीवन में अर्थ और उद्देश्य की हानि हुई जिसका परिणाम "परमेश्वर के पुत्रों" और "मनुष्य की पुत्रियों" के बीच अनुचित मिलन हुआ (6:2)। इसका परिणाम तेज़ी से पतन था, जब तक कि मनुष्य का प्रत्येक विचार और कल्पनाएँ बुराइयों से और पृथ्वी हिंसा से न भर गयी (6:5)। इसके परिणामस्वरूप, मनुष्य द्वारा स्वयं को और अपने संसार को नष्ट करने की प्रक्रिया के कारण, परमेश्वर ने अपने क्रोध के अन्तिम प्रगटीकरण के रूप में, पृथ्वी पर जलप्रलय भेजकर मनुष्य जाति को समाप्त करने का निर्णय किया (अध्याय 6-8)।

परमेश्वर का न्याय और उसके वचन का नवीनीकरण (अध्याय 9-11)

परमेश्वर के अनुग्रह में, नूह और उसका परिवार जल प्रलय से बच गए। उस समय से पृथ्वी पर सब मनुष्य उसके वंशज हैं। इसके प्रकाश में, लोगों के पास जातीय पक्षपात का कोई बाइबल सम्बन्धी आधार नहीं है, क्योंकि स्वभाव से मनुष्यों की कोई भी जाति दूसरी किसी जाति से निम्न नहीं है। इसके अलावा, परमेश्वर ने जल प्रलय के पूर्व की समस्त दुष्टता और हिंसा को समाप्त कर मनुष्य को एक साफ-सुथरे संसार में नया आरम्भ दिया। परमेश्वर ने सृष्टि की मूल व्यवस्था की पुनः पुष्टि की: वर्ष की नियमित ऋतुएं जारी रहेंगी, साथ ही साथ रात और दिन भी। इसके साथ, परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को सृष्टि की मूल आशीष से आशीषित किया: "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ" (9:1; देखें 1:28), और उसने फिर कभी भी जलप्रलय नहीं भेजने की प्रतिज्ञा दी जिससे सम्पूर्ण पृथ्वी नष्ट हो सकती है।

यद्यपि जलप्रलय ने पुराने संसार को और उन पापियों को जो उसे चित्रित करते थे, को नाश किया, बचे हुए पाप के मार्ग पर निरन्तर चलते रहे। नूह ने एक दाख बारी लगायी, अधिक दाखमधु पीकर मतवाला हुआ, और अपने तम्बू में निर्वस्त्र हो गया। तत्पश्चात हाम ने अपने पिता की नग्नता को अपने भाइयों पर उजागर किया (सम्भवतः एक उपहासपूर्ण रूप में), अपने पिता का अनादर किया और अपने पुत्र कनान के द्वारा अपने वंशज पर श्राप लेकर आया। बाबुल के लोग अपना नाम कमाने के लिए अहंकारी (और सम्भवतः मूर्तिपूजक) थे। उन्होंने एक मीनार बनाई जिसकी चोटी स्वर्ग तक पहुँचने के लिए अभिकल्पित थी। परमेश्वर ने बाबुल के लोगों के कार्य को उलट दिया, उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दी और उन्हें सारी पृथ्वी पर फैला दिया। परमेश्वर के समान बनने का मनुष्य का समस्त प्रयास - स्वतंत्र, स्वशासी, और स्वतुष्टि - केवल और पाप, झगड़ा, निराशा, और परमेश्वर और दूसरे मनुष्यों से विराग की ओर ले गया।

विश्वास में चलने के लिए परमेश्वर की बुलाहट (अध्याय 12-22)

एक अर्थपूर्ण जीवन और उद्देश्यपूर्ण नियति के लिए मनुष्य की एकमात्र आशा परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध में निहित थी, जिसे विश्वास में आरम्भ होना था। परमेश्वर ने पहल करके अब्राहम को एक विश्वास का क़दम बढ़ाने के लिए बुलाया, जो अपने परिवार के साथ एक मूर्तिपूजक था (यहोशू 24:2) - सालों बीतने के साथ साथ अब्राहम का विश्वास कभी डगमगाया, पर मजबूत भी होता गया, और उसने सीखा कि परमेश्वर ने उसे पूर्ण आज्ञाकारिता अथवा उसके किसी खूबी के कारण ग्रहण नहीं किया, किन्तु इसलिए कि परमेश्वर अनुग्रह द्वारा विश्वास से उसे धर्मी माना (15:6)।

परमेश्वर ने अब्राहम को केवल अपने लिए नहीं बल्कि एक माध्यम के रूप में चुना, जिसके द्वारा वह एक जाति को आशीष देना चाहता था, और अन्ततः पृथ्वी की समस्त जातियों को भी। उद्धार, तब, प्राथमिक रूप से अब्राहम के विषय नहीं है। बल्कि, यह उसके विषय है जो परमेश्वर अपने अनुग्रह द्वारा केवल इस एक व्यक्ति के लिए नहीं कर सकता था, किन्तु उसके द्वारा सम्पूर्ण संसार के लिए कर सकता था। जब परमेश्वर ने अब्राहम को अपना घर और परिवार छोड़कर एक ऐसे देश में जाने हेतु बुलाया जिसे उसने कभी नहीं देखा था, उसने विश्वास का क़दम बढ़ाया जो उसके सम्पूर्ण जीवन भर जारी रहा (इब्रा. 11:8)। विश्वासियों के इस पिता के जीवन का सर्वेक्षण प्रगट करता है कि एक व्यक्ति के विश्वास की वैधता यह नहीं है कि वह व्यक्ति विश्वास करता है कि परमेश्वर उसके लिए क्या करेगा। इसके बदले, यह है कि वह परमेश्वर के लिए क्या करने की और उसे क्या देने की इच्छा रखता है। अब्राहम के सम्बन्ध में, यह उसका प्रतिज्ञा पुत्र था (अध्याय 22)।

अब्राहम के विश्वास का परिणाम (अध्याय 23; 24)

जब अब्राहम ने सारा को दफन कर दिया, वह कनानियों के बीच में साठ वर्ष से अधिक रह चुका था।[16] उन्होंने पहचाना कि परमेश्वर ने उसे आशीषित किया है, एक "बड़ा प्रधान" (अक्षरशः एक "शक्तिशाली प्रधान"; 23:6) के रूप में समृद्ध और सामर्थी बनाया है। ज़्यादातर, अब्राहम ने कनान देश के निवासियों के समक्ष धर्मी जीवन जीकर अपनी ज्योति चमकने दी (मत्ती 5:16)। इसके साथ, सम्भवतः उसके पास सबसे बड़ी व्यक्तिगत सेना थी,[17] जिसके कारण वे उससे डरते थे और उसका आदर करते थे।

जब इसहाक के विवाह का समय आया, अब्राहम ने एक विश्वासयोग्य दास को मेसोपोटामिया में अपने सम्बन्धियों के पास पत्नी ढूंढ़ने भेजा। उसके प्रस्थान करने से पूर्व, उसके दास ने एक सम्भावना पर विचार किया, कि वह स्त्री उसके साथ कनान वापस नहीं आना चाहेगी। यदि ऐसा होता है, उसने अब्राहम से पूछा कि क्या वह इसहाक को मेसोपोटामिया ले जाए। स्वामी ने दास से इसहाक को वहाँ ले जाने के लिए सख्ती से मना किया। अब्राहम ने पहचाना कि परमेश्वर की

प्रतिज्ञा खतरे में पड़ जाएगी यदि उसका पुत्र चला जाता है और कनान देश में नहीं लौटता है। उसने समझ लिया कि, परमेश्वर के लोगों के लिए, जिस स्थान पर परमेश्वर ने उसे रहने के लिए बुलाया है उससे पीछे नहीं मुड़ा जा सकता है।

अब्राहम के दास ने हारान में अपने स्वामी के पुत्र के लिए सही लड़की का चुनाव करते समय प्रार्थना की शक्ति में और दिव्य मार्गदर्शन में विश्वास प्रगट किया। परमेश्वर ने उसे अब्राहम के भाई नाहोर के परिवार से रिबका का चुनाव करने में उसकी अगुवाई की। उसके बाद दास इसहाक की पत्नी होने के लिए उसे कनान लेकर आया (अध्याय 24)।

यह सब अब्राहम के चरित्र और समर्पण के विषय परमेश्वर के कथन को सच साबित करता है: "क्योंकि मैं जानता हूँ, कि वह अपने पुत्रों और परिवार को, जो उसके पीछे रह जाएँगे, आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें, और धर्म और न्याय करते रहें; ताकि जो कुछ यहोवा ने अब्राहम के विषय में कहा है उसे पूरा करे" (18:19)। अब्राहम का विश्वास इतना वास्तविक था कि उसने केवल उसे अपने बच्चों तक ही नहीं पहुँचाया, किन्तु "अपने घराने" तक भी, अर्थात्, खुद बाद में अपने सेवकों (दासों) तक भी पहुँचाया ताकि वे "यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें।"

मनुष्य की नियति के विषय परमेश्वर का पूर्वज्ञान (अध्याय 25-28)

याकूब और एसाव के बीच झगड़ा उनके जन्म पूर्व ही आरम्भ हुआ (25:22, 24-26), और परमेश्वर ने उसकी विशेषता रिबका को बता दी: "तेरे गर्भ में दो जातियाँ हैं, और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के लोग अलग अलग होंगे, और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे, और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा" (25:23)। जिस तरह इस अंश की व्याख्या की गई है, उसके बावजूद, इसका सम्बन्ध याकूब अथवा एसाव में से किसी के भी अनन्त नियति से नहीं है। यह नबूवत एक व्यक्ति के रूप में किसी एक बच्चे के विषय नहीं थी क्योंकि एसाव ने कभी भी याकूब की सेवा नहीं की; इसके विपरीत, संदर्भ भूमिकाओं के विषय था जो उनके वंशज (दो राज्य) विमोचक इतिहास में निभाने वाले थे। याकूब के वंशज इस्राएली थे, जबकि एसाव के वंशज एदोमी थे। दाऊद के काल में उत्तरवर्ती अधीन हो गए थे और उसके राज्याधीन सेवा करने के लिए विवश थे (2 शमूएल 8:14)। जैसे जैसे इतिहास संसार में मसीह के आने की ओर बढ़ता गया, सम्पूर्ण पुराने नियम परिणामस्वरूप यह, "दो राज्य के लोगों" के बीच निरन्तर झगड़े होते रहे।

नबूवत का सम्पूर्ण अर्थ उन्हें समझ में आया अथवा नहीं, याकूब और एसाव व्यक्ति के रूप में परमेश्वर के उद्देश्यों एवं कार्यों में अपने जीवनों में अपने मार्ग खोजते रहे, जिसका पूर्वज्ञान उनके जन्म के पूर्व परमेश्वर को था। दोनों लड़के और उनके माता-पिता परमेश्वर की इच्छा हड़पना चाहते थे अथवा उसका विरोध करना चाहते थे, जिसका परिणाम शामिल सभी लोगों के पारिवारिक सम्बन्धों में अत्यन्त दुःख था। इसलिए, याकूब के अधिकतर जीवन में सच्चाई और

विश्वास के लिए संघर्ष था कि उसकी चारित्रिक गलतियों और उसके द्वारा सम्पूर्ण कठिनाइयों और खतरों का सामना करने के बावजूद परमेश्वर वास्तव में उसके साथ रहकर उसके द्वारा अपनी प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करता।

दूसरी ओर, एसाव, अपने जीवन में परमेश्वर के मार्गदर्शन का विरोध किया। उसने कनानी पत्नियाँ चुन लीं, जो उसके माता-पिता के लिए अत्यन्त दुःख का कारण रहीं (26:34, 35; 27:46; 28:8)। कुछ समय के लिए, उसने याकूब के विरुद्ध उसकी आखिरी आशीष छीनने के कारण उससे ईर्ष्या रखी और उसकी हत्या करने का विचार रखकर खुद को दिलासा दिया (27:41)। एसाव ने अपनी स्थिति के लिए परमेश्वर को भले ही दोष दिया होगा क्योंकि, जितना वचन प्रगट करता है, उसने अपना जीवन विश्वास के बगैर जीया। वास्तव में, इब्रानियों का लेखक उसका संदर्भ एक "व्यभिचारी" और "अधर्मी" व्यक्ति का देता है (इब्रा. 12:16)। यह सब सुझाव देता है कि अवश्य ही बेहतर जीवन जीने का मार्ग भी है: परमेश्वर की इच्छा स्वीकार करने का मार्ग - जिस सीमा तक उसे जाना जा सके - और आज्ञाकारिता में उसका उत्तर देना। एसाव की तरह लोग, परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध एक कड़वे संघर्ष में जीवन जीते हैं, और ज्यादातर दुःख और निराशा के अनुभव के लिए स्वयं को दोष देते हैं। अनन्त कुम्हार के सामने स्वयं को समर्पित करने की बजाय, वे उनके जीवनों से कुछ उपयोगी और सुन्दर बनाने की उसकी योजना को बिगाड़ देते हैं (देखें यिर्म. 18:1-12; 2 तीमू. 2:20-22)।

बहुविवाह प्रथा के नकारात्मक परिणामों का प्रकट होना (अध्याय 29; 30)

एक स्त्री और एक पुरुष के बीच एकल सम्बन्ध को रचने में परमेश्वर का ज्ञान याकूब की दोनों पत्नियों: राहेल और लीया के बीच उपस्थित झगड़ा, ईर्ष्या, और तनाव के विरोध स्पष्ट दिखाई देता है। प्रत्येक स्त्री की सोच थी कि उसके लिए अधिक बच्चे जनने वाली ही उसकी प्रिय पत्नी हो सकती है; इसलिए समय के साथ, दोनों स्त्रियों ने अपनी दासियों को याकूब को दिये कि उनके नाम से और बच्चे उत्पन्न हो सकें। कुलपति के पत्नियों के मध्य यह होड़ उनके बच्चों के जीवनों में विनाशक परिणाम लेकर आए और स्वयं याकूब के लिए वर्षों का दुःख, जब उसने सोचा कि उसके प्रिय पुत्र, यूसुफ की मृत्यु हो चुकी है।

परमेश्वर के सामने प्रार्थना में धीरज का मूल्य (अध्याय 28; 32)

28:20-22 में याकूब की प्रार्थना वास्तव में एक "यदि ... तो" परमेश्वर के साथ सौदा करना है, किन्तु परमेश्वर के लिए मनुष्य के कार्य के कारण मनुष्य के पक्ष में परमेश्वर को कार्य करने हेतु विवश करने से दिव्य आशीषें प्राप्त नहीं की जा सकती हैं। न ही एक व्यक्ति शारीरिक वीरता अथवा परमेश्वर के दूत के साथ कुश्ती में इच्छा शक्ति प्रगट कर परमेश्वर की आशीषें प्राप्त कर सकता है! याकूब ने वास्तविक छुटकारा तब पाया जब उसने पहचाना कि उनकी ओर बढ़ रहे एसाव के चार सौ हथियारबन्द लोगों से वह स्वयं को और अपने परिवार को

नहीं बचा सकता था (देखें 33:1)। कितनी भी चालाकी, झूठ, अथवा धूर्तता याकूब के लिए लाभदायक नहीं थी। उसकी एकमात्र आशा परमेश्वर को दृढ़तापूर्वक थामे रहना था - जैसे 32:22-32 में उसने दूत को पकड़ा था (जो परमेश्वर का प्रतिनिधि था) - और उसकी आशीष के लिए अनुनय करना था।

अतः विश्वास से निरन्तर अनुनय, उत्तरित प्रार्थना की कुंजी है; और यह इसलिए नहीं है क्योंकि परमेश्वर को उसके पक्ष में कार्य करने हेतु राज़ी करने हेतु मनुष्य को ज़बर्दस्त प्रयास करना पड़ता है। बल्कि, धीरतवन्त प्रार्थना इस वास्तविकता को पहचानता है कि आशीष का स्रोत परमेश्वर है; और मनुष्य, जब टूटा हुआ होता है और घोर आवश्यकता के लिए मदद की गुहार लगाता है, आशीष के देनेवाले परमेश्वर की भलाई और करुणा में भरोसा भी जताना है।

परमेश्वर का प्रावधान करनेवाला कार्य (अध्याय 37-50)

यूसुफ की कहानी यह प्रकट करती है कि परमेश्वर किस तरह दृश्य के पीछे रहकर लोगों के जीवनों में और राष्ट्रों में अपने उद्देश्यों को पूरा करता है, और स्वतंत्र इच्छा का उल्लंघन किए बगैर ऐसा करता है। दिव्य शतरंज के बोर्ड पर लोग प्यादे नहीं है, जिन्हें परमेश्वर द्वारा मनमाने ढंग से एक बार इस ओर और दूसरी ओर जाने को बाध्य किया जाता है। इसके विपरीत, लोगों द्वारा किए गए अच्छे और बुरे कार्यों को लेकर परमेश्वर अपने अनन्त उद्देश्यों को पूरा करता है (रोमि. 8:28)। अब्राहम के वंशज के रूप में, यूसुफ के विषय, परमेश्वर की इच्छा थी कि वह याकूब के गोत्र के लिए, मिस्र के लिए, और प्राचीन भूमध्यसागरीय संसार के लोगों के लिए आशीष का माध्यम बने।

यूसुफ का वृतान्त जीवंतता और स्पष्टता के साथ समझाता है कि कभी - कभी लम्बे और कठिन आज़माइश के बावजूद भी परमेश्वर घमण्डी, स्वार्थी, और मनुष्यों के बुरे कृत्यों-जैसे मिस्री दासत्व में एक भाई को बेचना - का उपयोग अपनी योजना की पूर्ति हेतु करता है। अवश्य ही, परमेश्वर उनको सर्वोत्तम उपयोग कर सकता है जो निरन्तर उसकी इच्छा को ढूंढते रहते हैं; किन्तु उसके बाद भी, उसका हाथ उनके जीवनों में प्रकट नहीं हो सकता है। परमेश्वर की ईश्वरीय देख-रेख को उत्तम रीति से तभी समझा जा सकता है जब कोई बीती हुई बातों का सर्वेक्षण करता है (45:5-7; 50:20)।

धर्मनिष्ठ चरित्र निर्माण में नैतिक मूल्यों का स्थान (अध्याय 39)

यूसुफ मिस्र में दास था, और जब पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ को बार-बार नैतिक रूप से पथभ्रष्ट करने की कोशिश की, उसके इनकार करने का आधार दोहरा था। वास्तव में, उसने कह दिया, "जो कुछ इस घर में है मेरे हाथ में है, उसे मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता ... और उसने तुझे छोड़, जो उसकी पत्नी है, मुझ से कुछ नहीं रख छोड़ा।" दूसरे शब्दों में, "पोतीपर मुझ पर भरोसा करता है, और उसकी पत्नी के साथ अवैध यौन सम्बन्ध रखना उसके भरोसे का

विश्वासघात है।" उसने यह भी कहा कि किसी व्यक्ति की पत्नी के साथ व्यभिचार करना परमेश्वर के विरुद्ध पाप होगा।

यह केवल एक अनुमान है कि किस तरह यूसुफ ने पवित्रता और नैतिक मूल्यों का सशक्त भाव विकसित किया। सम्भवतः, उसके माता-पिता, याकूब और राहेल, ने उसे बताया होगा कि झूठ और धोखा उनके और उनके माता-पिता पर दुःख और आज़माइश ला सकता है, और उसके साथ-साथ यौन के विषय परमेश्वर अपने लोगों से किस प्रकार का नैतिक आचरण चाहता है। व्यभिचार मात्र एक सामाजिक अविवेकपूर्ण कार्य नहीं है जिसे सरलता से तर्कसंगत ठहराया जा सकता है; यह एक गम्भीर पाप है जो परमेश्वर के मूल चरित्र का उल्लंघन करता है, जो सर्वदा इस तरह के क्रिया से अवगत है।

परमेश्वर की क्षमा और मेल-मिलाप (अध्याय 42-45)

सतह पर, यूसुफ का अपने भाइयों के साथ अप्रिय व्यवहार और छल योजना उनको दुःख और पीड़ा के वर्षों के लिए कीमत चुकाने का प्रतिशोध जान पड़ता था जो उसने मिस्र में अनुभव किया था। फिर भी, यह सम्भवतः पता लगाने की जाँच थी, समय के एक अंश के बाद, क्या वे अभी भी उसी प्रकार के पुरुष थे जिनको वह अपने किशोरावस्था से याद रखा था। जो उन्होंने अपने छोटे भाई के साथ किया था क्या वे उसके लिए खेदित थे? क्या मेल-मिलाप सम्भव था? क्या वे पुनः परिवार हो सकते थे?

अवश्य ही, केवल यदि बड़े भाई अपने पछतावे में वास्तविक थे एक सच्चा मेल-मिलाप सम्भव था। मिस्र में भाइयों ने जिन कठिनाइयों का अनुभव किया, उनसे उनको एक से अधिक बार विश्वास हुआ कि परमेश्वर उन्हें यूसुफ के साथ उनके व्यवहार के कारण उचित दण्ड दे रहा था। आखिरकार, जब यूसुफ ने स्वयं को अपने भाइयों पर प्रकट किया और उनको अपनी क्षमा के विषय आश्वस्त किया, उसने उनसे जोर देकर कहा कि यह केवल उनके लिए उसके प्रेम पर आधारित नहीं था, किन्तु इस अनुभूति पर कि परमेश्वर के उद्देश्य उनके जीवनों में पूरे हो रहे थे।

भविष्य की कुंजी के रूप में आशा (अध्याय 49; 50)

याकूब ने जो आशीषें अपने बेटों पर उच्चारित की सर्वप्रथम व्यक्तियों के रूप उनके विषय में थीं; किन्तु, एक वृहत् भाव में, उसके शब्द इन पुरुषों के अलावा उनके वंशज: कनान में इस्राएल के बारह गोत्रों के भविष्य की ओर इशारा कर रहे थे। अब्राहम को दिये गए आशीषों के वाहक के रूप में, उन्हें कभी भी परमेश्वर की उच्च और पवित्र बुलाहट को नहीं भूलना था जो उनको, उनके बच्चों को, और सम्पूर्ण संसार को मिली थी (12:1-3)। प्रत्येक पीढ़ी को अपने बच्चों को सिखाना अनिवार्य है कि वे कौन हैं, वे किसके हैं और वे किस (किस उद्देश्य से) लिए हैं। भविष्य उनका है, जिनके पास पूरा करने हेतु प्रतिज्ञाएँ और

जिम्मेदारियाँ हैं और जिनकी अवहेलना वे नहीं करते हैं।

पहले से ही, याकूब की आशीषों में, यह प्रकट है कि इस्राएल की भविष्य की आशाएँ यहूदा के गोत्र के शासक में सीमित हो जाएँगी जिसके प्रति लोग (गैर यहूदी) आज्ञाकारी होंगे (49:10)। इस पुस्तक का अन्त यूसुफ का अपने भाइयों को अब्राहम के परमेश्वर की आशीषें और उनके मिस्र छोड़ते समय उसकी हड्डियों को अपने साथ ले जाने से होता है क्योंकि वह उनका स्थायी घर नहीं है। वे ऐसे लोग थे जिनको प्रतिज्ञात देश में एक नियति को पूर्ण करना था (50:24, 25)।

रूप-रेखा

पहली पद्धति के विचार से इस पुस्तक के दो मुख्य भाग हैं। पहला भाग अति प्राचीन इतिहास की घटनाओं को चित्रांकित करता है, जबकि दूसरा भाग कुलपतियों: अब्राहम, इसहाक, याकूब, और यूसुफ के वृत्तान्तों से संगठित है।

भाग 1

I. संसार का अति प्राचीन इतिहास (1:1-11:32)
   - A. सृष्टि रचने का आरम्भ और समाप्ति (1:1-2:3)
   - B. वाटिका में पुरुष और स्त्री की सृष्टि (2:4-25)
   - C. मनुष्य का पतन (3:1-24)
   - D. वाटिका के बाहर आदम और हव्वा का परिवार (4:1-16)
   - E. दो वंशावलियाँ (4:17-26)
   - F. प्राक्कालीन कुलपति (5:1-32)
   - G. महा जलप्रलय: विनाश और बचाव (6:1-22)
   - H. जलप्रलय का आरम्भ (7:1-24)
   - I. मनुष्य के लिए नया आरम्भ (8:1-22)
   - J. नए संसार के लिए परमेश्वर के नियम और वाचा (9:1-29)
   - K. नूह के वंशज (10:1-32)
   - L. राष्ट्रों का विस्तार: भाषाओं की गड़बड़ी और वंशावलियाँ (11:1-32)

भाग 2

II. अब्राहम का वृत्तांत (12:1-25:18)
   - A. एक नया देश: कनान जाने के लिए अब्राहम की बुलाहट (12:1-20)
   - B. अब्राहम और लूत का अलगाव और प्रतिज्ञाओं का नवीकरण (13:1-18)
   - C. युद्ध में अब्राहम की भागीदारी और दो राजाओं से मुलाकात (14:1-24)
   - D. अब्राहम के साथ परमेश्वर की भूमि वाचा (15:1-21)

E. हाजिरा और इश्माइल की कहानी (16:1-16)
F. अब्राहम के साथ परमेश्वर की राष्ट्र वाचा (17:1-27)
G. परमेश्वर की अब्राहम से मुलाकात (18:1-33)
H. सदोम और अमोरा का विनाश (19:1-38)
I. गरार देश में अब्राहम और सारा: परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की रक्षा (20:1-18)
J. इसहाक का जन्म (21:1-7)
K. इसहाक और इश्माइल के बीच तनाव (21:8-21)
L. अबीमेलेक के साथ अब्राहम की संधि (21:22-34)
M. अब्राहम के विश्वास की जाँच: अपने पुत्र इसहाक को बलिदान करने की बुलाहट (22:1-24)
N. सारा की मृत्यु (23:1-20)
O. परमेश्वर के प्रबन्ध का प्रकटीकरण: इसहाक के लिए एक पत्नी (24:1-67)
P. अब्राहम के अन्तिम दिन (25:1-11)
Q. इश्माइल के वंशज (25:12-18)

III. इसहाक का वृत्तांत (25:19-28:9)
A. एसाव और याकूब का जन्म (25:19-26)
B. जन्म अधिकार के लिए याकूब का एसाव के साथ सौदा (25:27-34)
C. इसहाक का पलिश्तियों के बीच निवास (26:1-33)
D. एसाव की हित्ती पत्नियों के लिए इसहाक और रिबका का दुःख (26:34, 35)
E. याकूब का एसाव की आशीषें चुराना (27:1-45)
F. हारान को जाने से पूर्व इसहाक का याकूब को निर्देश (27:46-28:5)
G. इसहाक को प्रसन्न करने हेतु एसाव का विलंबित विवाह (28:6-9)

IV. याकूब का वृत्तांत (28:10-36:43)
A. बेतेल में याकूब: ईशदर्शन और संकल्प (28:10-22)
B. याकूब के विवाह (29:1-30)
C. लीया और राहेल के बीच प्रतिद्वंद्विता (29:31-30:24)
D. पशुओं के झुंड के लिए याकूब का लाबान के साथ सौदा (30:25-43)
E. लाबान से याकूब और उसके परिवार का अलग होना (31:1-55)
F. बीस वर्षों के बाद याकूब और एसाव का पुनः मिलन (32:1-33:17)
G. याकूब और उसका परिवार शेकेम को जाते हैं (33:18-34:31)
H. बेतेल को लौटना (35:1-15)
I. बेतेल का परिणाम (35:16-29)
J. एसाव के वंशज (36:1-43)

V. यूसुफ का वृत्तांत (37:1-50:26)
  A. कनान देश में यूसुफ (37:1-36)
  B. यहूदा और उसकी बहू तामार (38:1-30)
  C. पोतीपर के घर में दास के समान यूसुफ (39:1-23)
  D. बंदीगृह में यूसुफ (40:1-23)
  E. फिरौन के रहस्यमय स्वप्न (41:1-57)
  F. यूसुफ के भाई मिस्र में (42:1-38)
  G. भाई मिस्र को लौटते हैं (43:1-34)
  H. संकट में बिन्यामीन (44:1-34)
  I. अपने भाइयों से यूसुफ का पुनः मिलन (45:1-28)
  J. याकूब के परिवार का मिस्र जाना (46:1-47:12)
  K. अकाल का जारी रहना (47:13-26)
  L. याकूब के आखिरी दिन (47:27-48:22)
  M. याकूब का अपने पुत्रों को आखिरी आशीषें देना (49:1-27)
  N. याकूब की मृत्यु और दफनाया जाना (49:28-50:14)
  O. यूसुफ के अंतिम वर्ष (50:15-26)

समाप्ति नोट्स

[1]सेपट्युजेन्ट इब्रानी धर्मग्रन्थ का यूनानी अनुवाद है। सामान्य रूप से "LXX" के रूप में उद्धरित यह अनुवाद जिसका अर्थ "सत्तर" है कोई 70 विद्वानों द्वारा] लगभग 250 ई.पू. में सिकंदरिया में प्रकाशित किया गया। [2]मिश्नाह *अबोथ* 1.1. [3]मार्क ज्वी ब्रेत्तलेर, "तोरह," ज्यूइश स्टडी बाइबल, एड. अडले बर्लिन और मार्क ज्वी ब्रेत्तलेर के द्वारा (न्यू यॉर्क: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004), 2-3. [4]देखें 1 राजा 2:3; 2 राजा 14:6; 23:25; 2 इतिहास 23:18; 25:4; 30:16; 35:12; एज्रा 3:2; 6:18; नहेम्याह 8:1; 13:1. मूसा के सम्बन्ध में नया नियम में समान संदर्भ है (मरकुस 12:26; लूका 2:22; 24:44; यूहन्ना 1:45; 7:23; प्रेरितों. 13:39; 15:5; 28:23; 1 कुरि. 9:9 और दूसरे भाग)। [5]मूसा और निर्गमन के लिए दो संभावित तिथियों दी गयीं हैं: आरंभिक तिथि लगभग ई.पू. 1445 है, और बाद की तिथि ई.पू. 1290 के आसपास है। प्रत्येक तिथि की शक्ति और अशक्ति पर चर्चा उचित तौर से निर्गमन के ऐतिहासिक घटनाओं के एक अध्ययन से सम्बंधित है। देखें अल्फ्रेड जे. होएर्थ, *आर्कियोलोजी एंड दी ओल्ड टेस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1998), 57 और 59; के. ऐ. किचन, *ओन द रिलायबिलिटी ऑफ़ द ओल्ड* टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: *इर्दमैन्स पब्लिशिंग कम्प.*, 2003), 307-10; और कॉय डी. रोपर, *एक्सोडस*, ट्रुथ फॉर टुडे कमेंटरी (सीरक्य, अर्क: रिसोर्स पब्लिकेशन, 2008), 656-59. [6]ये श्रोत संभवतः वंशावलियों का वर्णन सम्मिलित किये होंगे (देखें पृष्ठ 4-5)। [7]कुछ लोगों का अनुमान है वह एज्रा है और वे इसे एक आरंभिक यहूदी परंपरा से प्राप्त किए हैं जो 2 एस्द्रास 14:42-48 में पाया जाता है जिसे प्रेरित नहीं माना जाता है और अप्रमाणित है। इसके अनुसार परमेश्वर ने एज्रा के साथ अन्य पांच व्यक्तियों को 94 पुस्तकें लिखने और "पहली 24 पुस्तकें सार्वजनिक करने की आज्ञा दी" (प्रमाणित इब्रानी धर्मग्रन्थ-संग्रह, उन्हें सम्मिलित करने के एक परंपरागत तरीकानुसार)। [8]परमेश्वर ने अब्राम का नाम बदलकर "अब्राहम" रख दिया (17:5), यह इस बात को इंगित करता है कि वह बहुतों का पिता होगा। इस टीका में उसके लिए बाद वाला का उपयोग किया गया है। [9]एक सम्भावित विकल्प को मिस्र के 925 ई.पू. के शोशंक 1 के दिए स्थानों की सूची

में मिला है, जिसको "इथे एंक्लोसर ऑफ़ अबराह" पढ़ा जा सकता है, यह नेगेव की ओर संकेत करती है जो इस्राएल का दक्षिणी प्रदेश है, लेकिन इसे "एंक्लोसर ऑफ़ स्टैलियन" नहीं कहा जा सकता। परन्तु जैसा के. ऐ. किचेन का विचार है "नेगेव, जहाँ यह स्थान स्थित है, वह घोड़ो के लिए नहीं जाना जाता" (किचेन, *रिलायबिलिटी*, 313)। [10]होएर्थ, 142.

[11]के. ऐ. किचेन, *एंशिएंट ओरिएंट एंड ओल्ड टेस्टामेंट* (शिकागो: इंटर एंड वर्सिटी प्रेस, 1966), 48-49; गॉर्डोन जे. वेन्हम, *जेनेसिस 16-50*, वर्ड बिब्लिकल कमेंटरी, वोल. 2 (डलास: वर्ड बुक्स, 1994), xxiii. [12]किचेन, *रिलायबिलिटी,* 341-42. [13]वेन्हम, 175-76. [14]यद्यपि अब्राहम बेशक नुज़ी पट्टियों (ई.पू. पंद्रहवीं शताब्दी) से अनेक वर्ष पूर्व रहते थे, दूसरी सहस्त्राब्दी के मध्य प्राचीन मेसोपोटामिया की संस्कृति की स्थैतिक परिस्थिति का मतलब है कि वे सांस्कृतिक प्रथाओं की संरचना से पूर्व और बाद में संभवतः उनको प्रतिबिम्बित करती हैं। (होएर्थ, 102-3, n.1.) [15]उत्पत्ति के धार्मिक विषयों - जैसे परमेश्वर, सृष्टि, मनुष्य, पाप, अनुग्रह, और आदि - के ग्रन्थ का भाग होने बजाय यह भाग पुस्तक की धार्मिक शिक्षाओं का, जैसे जैसे वे विभिन्न अध्याय के शीर्षकों में आते हैं, संक्षिप्त विवरण देता है। इस का ढांचा और इसकी टिप्पणियां क्ल्यदे टी. फ्रांसिस्को की दी *ब्रॉडमेन बाइबल कमेंटरी*, वोल. 1, *जनरल आर्टिकल्स, जेनेसिस - एक्सोडस*, के "जेनेसिस" रेव्ह. एड, एडिटर क्लिफ्टन जे. एलन (नैशविल: ब्रॉडमेन प्रेस, 1969), 115-16. [16]हारान छोड़ते समय अब्राहम पचहत्तर वर्ष का था (12:4), और वह सारा से दस वर्ष बड़ा था, जिसने इसहाक को जन्म दिया जब वहनब्बे वर्ष की थी और अब्राहम एक सौ वर्ष का था (17:17; 21:5)। जब सारा की मृत्यु 127 वर्ष की उम्र में हुई (23:1), अब्राहम 137 वर्ष का था, और उसे हारान से निकले हुए बासठ वर्ष हो चुके थे। [17]पचास वर्ष पूर्व, उसने 318 लड़ाकू लोगों को इकठ्ठा किया था जिनका जन्म उसके घर ही में हुआ था (सम्भवतः दास के रूप में; 14:14)। इस समय तक, उसके पास और भी बहुत से नौकर/दास रहे होंगे जो जरुरत पड़ने पर लड़ाई लड़ने में सक्षम थे।